भारतीय दर्शन का पारम्परिक वर्गीकरण

इसे हम दो भागो मे विभक्त किया गया है।

- आस्तिक
  - (1) सांख्य दर्शन
  - (2) न्याय
  - (3) वैशेषिक
  - (4) योग
  - (5) वेदान्त
  - (6) वेदान्त
- नास्तिक
  - भौतिकवादी
    - लोकायत
  - आत्मवादी
    - जैन दर्शन
    - बौद्ध दर्शन

आस्तिक

(1) सांख्य दर्शन →

सबसे प्राचीन दर्शन है।
इसके प्रतिपादक महर्षि कपिल है।
महर्षि कपिल ने स्वभाव के तीन तत्व है

सत	रज	तम
रंग श्वेत	रंग - लाल	काला
गुण सुख	गुण - कर्म व कष्ट	तत्व = व्यसन
ज्ञान व प्रकाश	चर तत्व है।	अज्ञानता
सुखी, ज्ञानी	उत्प्रेरक का	दुःखी, अज्ञानी
सदाचारी	कार्य करता है	दुराचारी

अतः सांख्य दर्शन के अनुसार विद्यार्थी को सद्गुण की ओर प्रेरित कर सुखी, ज्ञानी सदाचारी बनाना

Scanned with CamScanner

इस दर्शन के अनुसार प्रकृति व पुरुष दो मूल तत्व है

⇒ सांख्य का अर्थ है विवेक ज्ञान, प्रकृति पुरुष के भेद का ज्ञान

⇒ कुछ विद्वान इसे द्वैतवादी और अनेकान्त वादी दर्शन कहते हैं

⇒ सांख्य के अनुसार उत्पत्ति और विनाश वस्तु के धर्म है, इस परिवर्तन को परिणाम तथा विवर्त कहा गया

इसे सिद्ध करने में सत्कार्य (सूक्ष्म + वैज्ञानिक) की स्थापना हुई सांख्य के अनुसार प्रकृति और पुरुष एक दूसरे के बिना क्रिया नहीं कर सकते।

⇒ सांख्य में कुल 25 तत्व बताये गये हैं।

⇒ ज्ञानेन्द्रियां - 05
कर्मेन्द्रियां - 05
- पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश
= 16

प्रकृति और विकृति - अहंकार, बुद्धि, शब्द-तन्मात्र, स्पर्श तन्मात्र, रूप रस, गन्ध
= 7

ज्ञान प्राप्ति के साधन

प्रत्यक्ष अनुमान शब्द

प्रकृति + पुरुष

प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द → ज्ञान - संसार

Scanned with CamScanner

Page No.
Date : / /

ज्ञानेन्द्रिया + कर्मेन्द्रिया

यथार्थ पदार्थ

साख्य दर्शन का आरम्भ →

साख्य का प्रतिपादन महर्षि कपिल द्वारा किया गया है। यह भारतीय दर्शनो में सबसे प्राचीन दर्शन है। क्योकि इसका उल्लेख – मनुस्मृति, रामायण व महाभारत में मिलता है।
महर्षि कपिल को भगवान विष्णु का अवतार ब्रह्मा के मानस पुत्र एवं अग्नि के अवतार के रुप मे पूजा गया है। यह भी कहा जाता है कि कपिल वस्तु का उनके नाम पर ही स्थापित किया गया है।

सांख्य दर्शन का अर्थ ⇒

विद्वानो ने शाख्य शब्द का अर्थ दो प्रकार से लिया है शांख्य तथा ज्ञान। कुछ विद्वानो का मत है कि
– शांख्य का सम्बन्ध – तत्वो की संख्या से है
शांख्य का दूसरा अर्थ है – दिव्य ज्ञान
इसका सम्बन्ध शरीर और आत्मा से है
मूलतः शाख्य दर्शन ईश्वरवादी नही है
ज्ञान मीमांशा की दृष्टि से यह यर्थार्थवादी है
तत्व मीमांशा की दृष्टि से द्वैत वादी है।
यह दो अंतिम सत्ताओं मे विश्वास करता है। पुरुष तथा प्रकृति यह दोनो अनन्त आदि है। ⟶

सांख्य

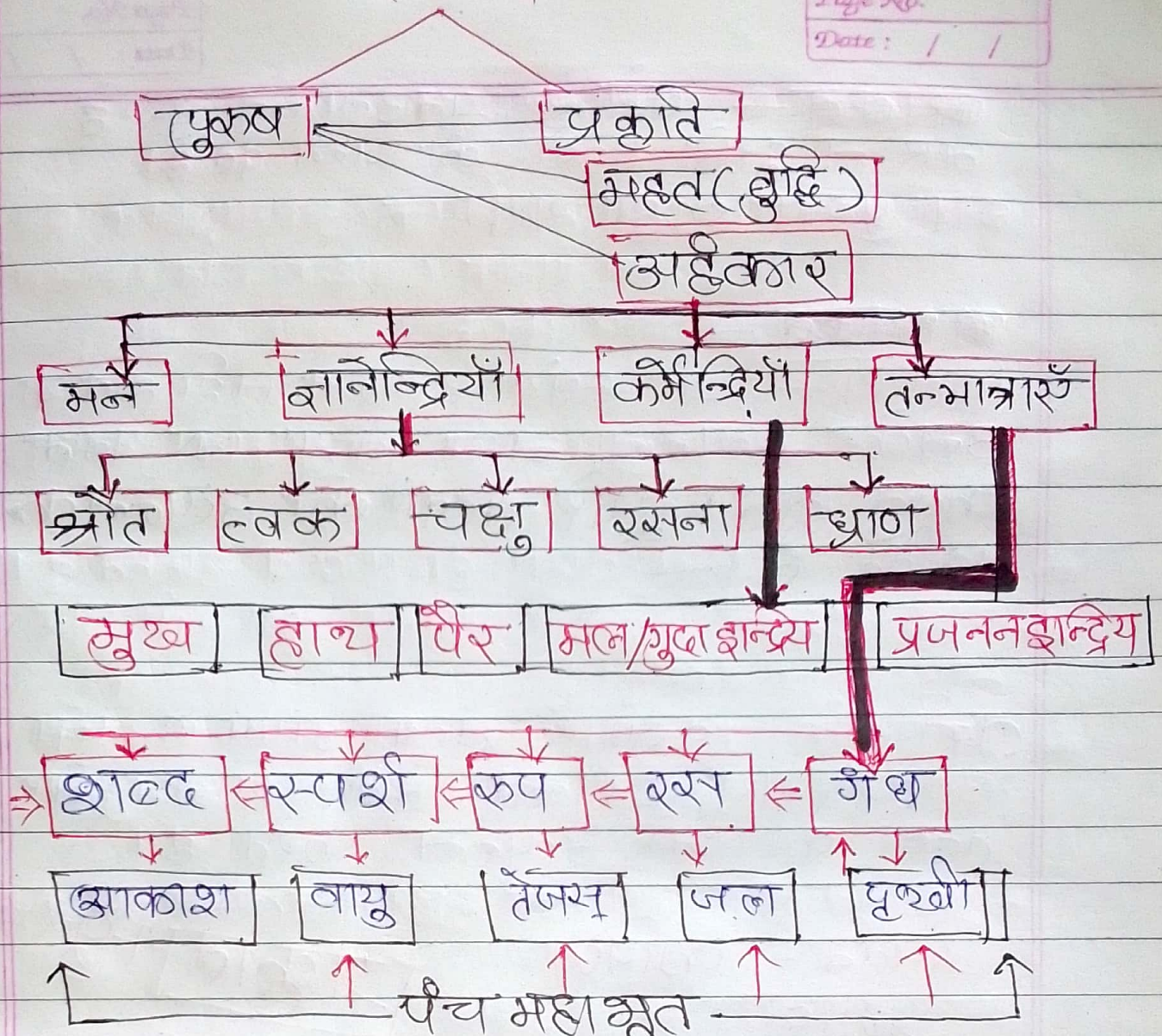

प्रकृति के तीन गुण हैं। — सत, रज, तम

प्रकृति का विकास पुरुष के संसर्ग से होता है।
सभी वस्तुओं में तीनों गुण एक ही मात्रा में नहीं पाया जाता है।
⇒ किसी में कोई गुण प्रधान होता है। तो दूसरे किसी में कोई गुण प्रधान होता है।

साख्य के अनुसार तीन प्रमुख तत्व है।
व्यक्त, अव्यक्त, तथा ज्ञाय

Scanned with CamScanner

Page No.
Date : / /

सांख्य तीन प्रमाण मानता है।

(1) प्रत्यक्ष - जो आँखो से दिख रहा है।

(2) अनुमान - जैसे-रोड गीला है तो हम अनुमान लगा लेते है कि बारिश हुआ होगा

(3) शब्द - जैसे-सत्यमेजयते किसी विद्वान द्वारा कहा गया है। यह आप्तवचन है।

सिद्धान्त - प्रकृति कारण वाद (सत्कार्यवाद)
कोई भी कार्य मूल रूप से अपने कारण वाद मे विद्यमान रहता है। जैसे बीज मे पेड नही दिखता है। लेकिन वृक्ष का मूल कारण बीज है।
— संसार जो दिखता है उसका मूल कारण ईश्वर है। यह ईश्वर को नही मानता
अंगू + पंगू अंगू आँख से अंन्धा है।
~~प्रकृति~~ - पंगू पैर से लंगडा है। लेकिन अँन्धे के कँधे पर बैठकर पंगू संसार का भ्रमण कर लेता है। अपना कार्य कर लेते है।
उसी प्रकार प्रकृति व पुरुष है। पुरुष के माध्यम से प्रकृति जड है पुरुष चेतन है। पंगवन्द न्यायेन अनुसारेण सँसारस्य कार्यम् कर्तुम करते
कैसे - 25 तत्वो के आधार पर

Scanned with CamScanner

सांख्य का आरम्भ

दुःख त्रय → 1 आध्यात्मिक (आत्मा, मन व शरीर)
2 → अधिभौतिक (बाह्य जगत सम्बन्धी)
3 → आधि दैविक

- अतः सांख्य इस सृष्टि को प्रकृति, पुरुष के योग से निर्मित मानती है।
- प्रकृति व पुरुष दोनो अनादि व अनन्त है।
- यह ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार नही करता है।
- इसके अनुसार मानव जीवन का अंतिम उद्देश्य **मुक्ति** है। जो विवेक ज्ञान द्वारा होगी

प्रकृति व पुरुष को मूल तत्व स्वीकार करता है।

सत्कार्य वाद के अनुसार

मानव का विकास मानव मे निहित होता है शिक्षा का कार्य इसे बाहर निकालना

⇒ सांख्य दर्शन भी शिक्षा का अन्यतम पारमार्थिक उद्देश्य मुक्ति को मानता है। प्रश्न यह है कि मुक्ति किससे तो जैसे बौद्ध दर्शन मे अविद्या एवं अज्ञान के कारण अन्धकार मे खोये हुए है इसी कारण मानव दुःखी है संसार में केवल दुःख ही दुःख है तो शिक्षा अज्ञान रूपी अन्धकार से मुक्ति दिलाती है। सांख्य के अनुसार सृष्टि अथवा शरीर, तीन तत्वों से बना है (सत, रज, तम) यह तत्व दुःख, सुख का कारण है।

Scanned with CamScanner

योग दर्शन

— (पतंजलि) —

⇒ योग शब्द का अर्थ है जुड़ना या मिलना अर्थात – जीवात्मा का परमात्मा से मिलन

⇒ योग दर्शन मे योग का अर्थ है चित्तवृत्तियों का निरोध चित्त (अन्तः करण) इसमे आते है।

चित्त → मन | अहंकार | बुद्धि

जब चित्त इन्द्रियो द्वारा बाह्य वस्तुओ के सम्पर्क आता है तो वह वस्तु का आकार ग्रहण कर लेता है इसे वृत्ति कहते है।
जैसे- किसी घटना से दुःखी होना

⇒ योग दर्शन सैद्धान्तिक ही नही बल्कि व्यवहारिक भी

⇒ स्वस्थ्य शरीर और सबल आत्मा दोनो ही इसके अध्ययन के विषय है।

योग दर्शन शरीर को महत्वहीन नही मानता, वरन इसे बहुत उपयोगी समझता है। यह दर्शन यह विश्वास करता है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ्य आत्मा निवास करती है। मन की पवित्रता ही इसे श्रेष्ठ बनाती है।

⇒ पतंजलि योग का लक्ष्य इच्छाओं पर आकांक्षाओं पर नियन्त्रण करना है।

⇒ योग का लक्ष्य आत्मा के वास्तविक स्वरूप को समझने का है।

यह स्वरुप इच्छाओं व आकांक्षाओं पर नियन्त्रण करके ही समझा जा सकता है।

Scanned with CamScanner

योग की स्थिति इच्छाओं और आकांक्षाओं पर नियन्त्रण करके ही समझा जा सकता है। जिस प्रकार हिलते जल मे किसी वस्तु का बिम्ब नही देखा जा सकता उसी प्रकार जब मन चलायमान होता है और नियन्त्रण मे नही होता तब ईश्वर से साक्षात्कार नही हो सकता।

ईश्वर के दर्शन के लिए योग समाधि आवश्यक है।

योग के आठ अंग हैं।

- यम
- नियम
- आसन
- प्राणायाम
- प्रत्याहार
- धारण
- ध्यान
- समाधि

(1) यम → यम का अर्थ है अनुपस्थित या लोप। हिंसा, झूठ, चोरी, व्यभिचार संग्रहण (परिग्रह) की अनुपस्थिति या मिटना यम है।

यम — पांच प्रकार के हैं।

- अहिंसा
- सत्य
- अस्तेय
- ब्रह्मचर्य
- अपरिग्रह

(2) नियम — यह भी पांच प्रकार के हैं।

- शौच
- संतोष
- तप
- स्वाध्याय
- ईश्वर प्राणिधान

Scanned with CamScanner